बनारस से अनवरत प्रकाशित

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

ISSN : 9334-0970

बीआर/35/0029626

प्रान्ति इंडिया

www.prantiindia.com magazine@prantiindia.com +91 94-535354-95

(हिन्दी को समर्पित मासिक पत्रिका)

जून 2025 हिन्दी साहित्य का एक उदयमान तारा, नई पीढ़ी की आवाज़ को आकार दे रहा है। ₹ 50

संपादकीय : बाजारवाद के बीच साहित्य

- एक दीप, एक दिशा/ए. के. प्रसाद...06
- कोटि -कोटि के कवि/दिलीप कुमार...11
- डॉ. अम्बेडकर: शिल्पी या एकमात्र निर्माता/सिद्धार्थ तिवारी...13
- मेरे पापा/वेदिका गुरव...19
- दिल्ली से बनारस/शशि धर कुमार...20
- हसरत पूरी न हुई/अरुणप्रिय...25

साहित्यिक
कार्यक्रम विशेष

Pranti

हमें भेजिए अपनी साहित्यिक पुस्तक-पत्रिकाएं

चयनित 501 कृतियों को मिलेगा प्रान्ति इंडिया पुरस्कार

नोट : अपनी प्रविष्टियाँ संपादकीय कार्यालय में भेजें।

प्रान्ति इंडिया ISSN : 9334-0970 | जून - 2025 | मूल्य : ₹ 50 | पृष्ठ : 28

प्रधान संपादक
आदित्य कुमार प्रसाद
(ए. के. प्रसाद)

संरक्षक व प्रबंधक : प्रदीप प्रसाद

विशेष संपादक : विनोद प्रसाद
विशेष सह-संपादक : विवेक रंजन
प्रबंध संपादक : दिव्यांजलि वर्मा
प्रबंध सह-संपादक : प्रेमलता चाँदना
आवरण अभिकल्पन : सौरभ कुमार

मुख्य कार्यालय
#495, पुरानी बाजार, बगौरा
सीवान-841404 (बिहार)

संपादकीय कार्यालय
जे11/125, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तर प्रदेश)

प्रान्ति इंडिया हिंदी साहित्य और संस्कृति को समर्पित एक जीवंत मंच है, जो हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्धि को प्रदर्शित करने और युवा पीढ़ी में इसके प्रति गहरी जागरुकता और प्रेम बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। हमारा मिशन हिंदी साहित्य के विविध पहलुओं को उजागर करना और सामाजिक परिवर्तन में सकारात्मक योगदान देना है, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन और सांस्कृतिक उत्थान हो सके। ध्यान दें कि सामग्री संपादित करते समय यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी, यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हो तो इसके लिए स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे।

पत्रिका की गुणवत्ता से संबंधित शिकायतों व सुझावों तथा वितरण, सब्सक्रिप्शन और विज्ञापन के लिए ई-मेल करें-
magazine@prantiindia.com
या संपर्क करें-
+91 94-535354-95
(सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रातः साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

संपादकीय पत्र व्यवहार
प्रधान संपादक
जे.11/125 ए-1, ईश्वरगंगी
वाराणसी-221001 (उत्तरप्रदेश)
दूरवाणी : +91 7258072725

इस अंक में..

संपादकीय/प्रधान संपादक	04
पेंटिंग ऑफ द अंक/मुकेश जोशी	05
एक दीप, एक दिशा/ए. के. प्रसाद	06
विवशता/अमृत बिसारिया	07
पिता सीख हैं/अतुल समाधिया	08
मैं हिन्दी हूं/मेधा सिंह	09
पोथी पढ़कर/संजय मृदुल	10
कोटि -कोटि के कवि/दिलीप कुमार	11
हाइकु/रमा गर्ग	12
डॉ. अम्बेडकर: शिल्पी या एकमात्र निर्माता/सिद्धार्थ तिवारी	13
सफर जारी है/राजेन्द्र लाहिरी	17
रात और सपनें/सिया राय	18
मेरे पापा/वेदिका गुरव	19
दिल्ली से बनारस/शशि धर कुमार	20
बच्चे क्यों कमाते हैं/आशीष 'विलोम'	22
मन कहां से लाऊंगा/डॉ. मधु गुप्ता	23
बेटी हो हद में रहना सीखो/नेहा चौरसिया	24
हसरत पूरी न हुई/अरुणप्रिय	25

रचना आमंत्रण

अपनी रचनाओं के साथ एक फोटो, सम्पूर्ण जीवन परिचय तथा संपर्क सूत्र हमारे संपादक महोदय को ई-मेल करें।
editor@prantiindia.com

अधिकृत विक्रेता

वाराणसी : राजू मैगजीन स्टोर, लंका | अदिति बुक स्टोर, डीएवी | कमलेश बुक स्टॉल, मैदागिन

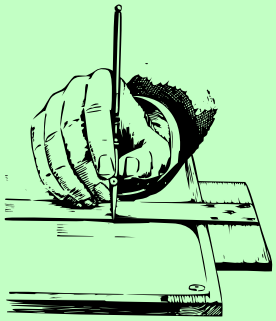

संपादकीय

कला जब तक मनुष्य के दुख से जुड़ी रहती है, तब तक वह जीवित रहती है।"

यह वाक्य साहित्य की आत्मा को स्पर्श करता है। पर आज, जब साहित्य स्वयं बाज़ार की चालों, प्रकाशन की नीतियों, और पुरस्कारों की राजनीति से घिरा है, तब यह प्रश्न और भी जरूरी हो जाता है। क्या साहित्य अभी भी मनुष्य के दुःख से जुड़ा है? या वह धीरे-धीरे मानवीयता से कटकर केवल ब्रांड, बुक फेयर और बेस्टसेलर लिस्ट का उत्पाद बनता जा रहा है? इस जून अंक में, प्रान्ति इंडिया का संपादकीय इसी सवाल की तह तक जाने की कोशिश है। हम न तो बाजार को पूर्णतः खलनायक घोषित कर रहे हैं, न ही भावनात्मक आग्रहों को एकमात्र सत्य। हमारा प्रयास है एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का, जिसमें हम यह समझ सकें कि आज का साहित्य बाजारवाद और मानवीयता के बीच कैसे संघर्ष कर रहा है। पहले साहित्यकार लिखा करता था अंतर्द्वंद्व के कारण, समाज के प्रति उत्तरदायित्व के कारण, और कभी-कभी मौन की असह्यता के कारण। लेकिन आज "लेखन" कई बार प्रदर्शन में बदल गया है। शब्दों की अंतरात्मा की जगह अब कवर डिज़ाइन, मार्केटिंग कैम्पेन, बुक लॉन्च इवेंट्स, और इंस्टाग्राम रील्स ने ले ली है। निषेध का मतलब यह नहीं कि साहित्य को नया रूप नहीं देना चाहिए। प्रस्तुति में आधुनिकता कोई दोष नहीं है। लेकिन अगर साहित्य की आत्मा बाज़ार के हाथ गिरवी रख दी जाए, तो रचना केवल एक 'प्रोडक्ट' बनकर रह जाएगी। आज जब हम बेस्टसेलर सूचियों पर नज़र डालते हैं, तो पाते हैं कि अधिकांश पुस्तकें "आसान कथ्य", "हल्का रोमांस", "द्रुत घटनाक्रम", और "भावनात्मक लुभाव" से भरी होती हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि ये रचनाएँ साहित्य नहीं हैं, परंतु सवाल यह है कि क्या इनका उद्देश्य सिर्फ बिकना है, या कुछ बदलना भी? सच यह है कि कठिन साहित्य, जो पाठक को सोचने के लिए बाध्य करे, जो व्यवस्था से टकराए, जो भीतर की उदासी या विरोध को स्वर दे अब हाशिए पर है। प्रकाशक वही छापना चाहते हैं जो 'चल' जाए, न कि वह जो 'चिंता' पैदा करे। इधर एक नया ट्रेंड दिख रहा है कि हाशिए की आवाज़ें भी अब बाज़ार के लिए 'प्रोडक्ट' बन चुकी हैं। कई बार दलित, आदिवासी, या स्त्री लेखकों को सिर्फ इसलिए प्रकाशित किया जा रहा है क्योंकि वे "नया विषय" हैं। यह स्वागतयोग्य है, लेकिन इसका राजनीतिक दोहन साहित्य को भी एक फैशन बना देता है। वास्तव में, क्या आज भी हम इन रचनाकारों को रचनात्मक गरिमा दे पा रहे हैं, या बस उन्हें अपनी विविधता की शोभा बना रहे हैं? साहित्यिक पुरस्कार अब अक्सर उस लेखक को मिलते हैं जो किसी विशिष्ट समूह, नेटवर्क या विचारधारा से जुड़ा होता है। प्रकाशन जगत में भी अब "कला" से पहले "क्रिकेट" देखा जाता है। मनुष्य की पीड़ा की जगह अब "ट्रेंडिंग टॉपिक" देखी जाती है। यह एक चुपचाप फैलती हुई अंधी व्यवस्था है, जो उत्कृष्ट साहित्य को गुमनाम कर रही है और चालाक लेखन को मंच दे रही है। यह केवल लेखक की नहीं, पाठक की भी हार है। इस पूरे विमर्श में पाठक की भूमिका बेहद निर्णायक है। जब पाठक गहराई से पढ़ता है, तब लेखक भी गहराई से लिखता है। लेकिन जब हम केवल मनोरंजन के लिए पढ़ते हैं, तो साहित्य मनोरंजन तक ही सीमित रह जाता है। आज ज़रूरत है विवेकशील पाठकों की, जो बिकते हुए को नहीं, बल्कि वास्तव में बोलते हुए साहित्य को चुनें। यही पाठक भविष्य में उस साहित्यिक धरातल को तैयार कर सकते हैं जो बाजार और मानवीयता दोनों के बीच संतुलन बनाए रखे। आज का साहित्य एक चौराहे पर खड़ा है। एक ओर है प्रकाशन की प्रतिस्पर्धा, सेल्फ-पब्लिशिंग प्लेटफॉर्म्स की बाढ़, ब्रांडेड लेखकों की चमक और पुरस्कारों की राजनीति। दूसरी ओर है मानवीयता की पुकार, समाज की विसंगतियाँ, हाशिए की बेचैनी, और आत्मा की सच्चाई। हमारे लिए जरूरी है कि हम इन दोनों धाराओं के बीच संतुलन साधें। बाजार को खारिज नहीं किया जा सकता, पर साहित्य की साख बाजार से ऊँची होनी चाहिए। प्रान्ति इंडिया इस द्वंद्व को पहचानता है। हमारा मंच उन आवाज़ों को प्राथमिकता देता है जो मानवता की गहराई, समाज की सच्चाई, और आत्मा की बेचैनी से उपजती हैं चाहे वे कितनी ही कम बिकें, पर वे अंदर तक छूती हैं। इस जून अंक में, हमने आपको ऐसी ही रचनाओं से रूबरू कराने का प्रयास किया है। कुछ जाने-पहचाने नाम, तो कुछ बिलकुल नए, पर हर रचना सच बोलने की हिम्मत रखती है। आप सभी पाठकों को सादर निमंत्रण है कि इन रचनाओं को केवल 'पढ़ें' नहीं, बल्कि उनसे संवाद करें।

—आपका प्रधान संपादक

पेंटिंग ऑफ द अंक

-मुकेश जोशी, उत्तराखंड

इनकी कला का उपहार 'प्रान्ति इंडिया का मासिक सब्सक्रिप्शन'

एक दीप, एक दिशा

- ए. के. प्रसाद

मेरे अप्रकाशित कहानी संग्रह से उद्धरित ...

अमय की पढ़ाई अभी हाल ही में बीएचयू से पूरी हुई थी। स्नातक की अंतिम परीक्षा जैसे ही खत्म हुई, वह कुछ दिनों के लिए अपने गांव चला गया। लेकिन मन को चैन कहां! भीतर कुछ बेचैन था। जैसे किताबें अब भी पुकार रही हों। भविष्य बनाने की तैयारी करनी थी, और बनारस में एक प्रसिद्ध कोचिंग संस्थान में दाख़िला लेकर वह दोबारा उसी शहर लौट आया था। मगर अबकी बार सब कुछ बदला-बदला था। कोचिंग में एडमिशन तो हो गया, लेकिन रहने के लिए एक अदद छत की तलाश ने उसकी सारी ऊर्जा सोख ली थी। अमय ने बनारस की गलियों की धूल फाँकी, ब्रोकरों के साथ कई मोहल्ले छान मारे, लेकिन सब निष्फल। जो रूम मिल रहे थे, वे कोचिंग सेंटर से तीन-पांच किलोमीटर दूर थे। मतलब हर दिन समय, पैसे और मन की शांति तीनों की बर्बादी। गेस्ट हाउस में उसका ठिकाना अस्थायी था, लेकिन मानसिक थकावट स्थायी होती जा रही थी। हर शाम वह खिड़की के पास बैठ जाता। नीचे लोगों की भीड़ बहती रहती, और ऊपर अमय की उम्मीदें धीमे-धीमे रिसती रहतीं। कोचिंग के पहले ही हफ्ते में वह समझ गया था कि ज़्यादातर विद्यार्थी आसपास के ही हैं। कुछ तो रोज़ अपने घर से आते थे। रसोई की गर्म रोटियों की खुशबू और मां की आवाज़ में लिपटे हुए। और वह... एक पराया-सा चेहरा, भीड़ में गुम। दिन बीतते गए... बेचैनी बढ़ती रही। फिर एक दिन, कोचिंग में बने एक परिचित मित्र से बातचीत के दौरान अमय ने यूँ ही पूछ लिया "तू किसी को जानता है क्या जो फ्लैट दिलवा सके?" मित्र ने सिर हिलाया "मैं किसी से पूछता हूं।" उसने किसी लड़की को आवाज लगाया और सारी बातें बताई। अमय को कुछ उम्मीद बंधी। भैया, परेशान मत होइए... मैं समझ सकती हूं आपकी हालत। मैंने भी यही सब झेला है। आप निश्चिंत रहिए। यह सुनकर अमय भावुक हो गया। यह देखकर उस लड़की ने कहा "भैया, आपकी बहन है न.. मिलकर ढूंढ लेंगे फ्लैट।" वो आवाज़, सधी हुई थी... लेकिन उसमें कोई ऐसी बात थी जो अमय के भीतर के अंधेरे को धकेल रही थी। एक अजनबी लड़की जो उसके संघर्ष को महसूस कर पा रही थी। वह कुछ क्षण चुप रहा। शब्द कहीं अटक गए। ऐसा मानवीय स्पर्श अमय ने पहली बार महसूस किया था निस्वार्थ, निर्दोष। अगले दो दिन में वो बहन सच में उसके साथ कई जगह गईं, बात की, मोलभाव किया और अंत में वन बीएचके फ्लैट मिल ही गया। कोचिंग के पास, बिल्कुल जैसा अमय चाहता था। उस दिन जब वह पहली बार अपने नए कमरे में बैठा। दीवार पर चमचमाती घड़ी उसे निहारे जा रही थी और अब समय बर्बाद न करने की सलाह दे रही थी। लेकिन उसके भीतर एक गहरी शांति थी। उसे लगा जैसे जीवन ने उसके हाथ में एक नई चाभी थमा दी हो। अमय ने उस दिन अपनी डायरी में लिखा "इस शहर ने मुझे किताबें दीं, गलियाँ दीं, ठोकरें दीं... और फिर, एक बहन दी जिसने मेरे भीतर के अंधेरे को देख लिया।" कभी-कभी, ज़िंदगी एक छोटे से मोड़ पर ले जाती है, जहाँ कोई अजनबी आपको सहारा दे देता है। और वही एक क्षण, पूरे सफ़र की दिशा तय कर देता है। हर रास्ता मंज़िल तक नहीं ले जाता, लेकिन हर मोड़ पर कोई न कोई हमें थामने जरूर आ जाता है। ज़िंदगी का असली उजाला हमेशा बड़ी चीज़ों से नहीं, बल्कि किसी अनजाने के छोटे से सहारे से फूटता है। अमय की तरह, हम सबकी ज़िंदगी में भी कभी-कभी एक "दीप" आता है, जो न सिर्फ राह दिखाता है, बल्कि हमारी दिशा भी तय कर देता है। इसलिए भरोसा रखिए, अंधेरा चाहे जितना भी हो... कोई न कोई, कहीं न कहीं, आपकी रौशनी बनने को तैयार है।

विवशता

धूप के तपते थपेड़े,
जैसे आसमान से आग बरस रही हो,
हर साँस,
जैसे तपते लोहे से गुजर रही हो।

सूखती नदियाँ,
कराहते खेत,
धरती,
जैसे चुपचाप सब कुछ सह रही हो।

पंछियों की प्यास,
अब वो स्वर नहीं,
छांव भी कहती है,
"मैं अब थक चुकी हूँ"।

हरियाली भी तपती है,
पत्ते हांफते हैं,
ग्रीष्म की यह विवशता,
बड़ी कठिनाई लाए सूरज का ज़ोर।

फिर भी,
मन में कहीं,
एक कोना कहता है,
"सावन ज़रूर आएगा"।

- अमृत बिसासिया (दुबई)
संस्थापक, अमृत प्रवाह अंतरराष्ट्रीय साहित्य मंच

पिता सीख हैं

पिता सीख हैं,
पूरा स्कूल हैं ।
पिता सिखाते हैं,
लड़ना, बचना,
सम्हलना, सम्हालना ।
दौड़ना, जीतना,
ठहरना, रुकना ।
सोचना, विचारना,
समझना, समझाना ।
पिता प्रतिमूर्ति हैं
सच के, संघर्ष के,
विजय के, उत्कर्ष के ।
पिता सूर्य हैं
प्रेम का, सम्मान का,
ज्ञान के प्रकाश का ।
पिता आरम्भ हैं,
हर नए अध्याय का
जीवन के पर्याय का ।
पिता पुष्प हैं
संस्कार का
आध्यात्म का ।
पिता तप नहीं,
सम्पूर्ण तपोवन हैं
मरुस्थल में सरोवर हैं ।

– अतुल समाधिया (भोपाल)
सम्पादक, अमृत भूमि

मैं हिन्दी हूं...

मैं हिन्दी हूं... मैं हिन्दी हूं..."
मैं वाणी हूं उस भारत की, जिसने वेदों से ज्ञान उगाया,
जिसने हर भाषा को अपने हृदय में है अपनाया।

मैं रणभूमि की गरज हूं,
सुभाष की मै पुकार हूं, झाँसी की तलवार हूं,
भगत की जयकार हूं! जो मिटे मातृभूमि के वास्ते,
उनके रक्तों से रंगी पताका मै !

शब्दों की सरिता, रसधार हूं, संस्कृति की दीपशिखा, उजियार हूं।
मैं तुलसी की चौपाई हूं, मैं मीरा की विनती, रसपाई हूं।
जन-जन की वाणी मै , भावों की गहराई हूँ,
गंगा-जमुना परिष्कार लिए भारत की सच्चाई हूँ।

राम के नाम में रम जाऊं, कबीर की वाणी में गूंज जाऊं।
संस्कृति की पहचान मैं हूँ, शब्दों की मुस्कान मैं हूँ,
तुलसी, प्रेमचंद, महादेवी, सबकी ही संतान मैं हूँ।

मैं राधा की हूं प्रेम बांसुरी, कृष्ण की बाँहों की छाया हूं।
मै हूं विरह के आँसू मे, मै ही मिलन की हँसी मे ,
मै हर प्रेम कथा की माया हूं।

मैं एक अनाथ की रात हूं, भूखे पेट की बात हूं।
मैं सूने आँगन की खामोशी, वो चिट्ठी जो कभी ना आई
मैं उसका इंतज़ार हूं।

मैं ठहाके की चाय हूं, व्यंग्य की चुटकी मे ,
मै तानों की माया हूं। कभी नट की नटखट बोली,
तो कभी कवि की मसखरी हूं।
मैं ध्यान की गहराई हूं, गांधी की करुणाई हूं।
बुद्ध की निर्वाण-सी चुप्पी, मैं आत्मा की सच्चाई हूं।

मैं हर रस में रची-बसी हूं, हर मन की भाषा हूं।
तू चाहे जिस रूप में पुकार, मैं तेरे हृदय की अभिलाषा हूं।

-मेधा सिंह
निवर्तमान छात्रा, बीएचयू

पोथी पढ़कर

कितना कुछ पढ़ा
ककहरे से शुरु कर
कितनी भाषाएं सीखी
कविता, कहानी, उपन्यास
क्या- क्या नहीं पढ़ा।
उम्र गुज़र गई
अक्षरों के मकड़जाल
सियाही की खुशबू
जिल्द की चिकनाई
तस्वीरों की दुनिया के बीच
दिन महीने साल
पढ़ते हुए बिता दी ज़िंदगी।
नहीं सीख पाया लेकिन
भावनाओं को पढ़ना
इंसान को गुनना
रिश्तों को सलीके से रखना।
बुकमार्क्स की तरह
दबाता रहा कमजोरियाँ
पन्नों के बीच छिपाता रहा,
अंडरलाइन की हुई बातें
सहेजता रहा किताब दर किताब
पर अमल न कर पाया कभी।
किताबों की दुनिया से
बाहर निकल कर न देखा
क्या क्या लिखा है चेहरों पर
दिल में, रिश्तों में, लोगों में
पढ़ा लिखा खूब हूँ मैं
फिर भी फेल हूँ
दुनियादारी के इम्तिहान में।

- संजय मृदुल (छत्तीसगढ़)
+91 9098177600

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

कोटि -कोटि के कवि

— दिलीप कुमार

“कोई ऐ शाद पूछे या न पूछे
इससे क्या मतलब,
खुद अपनी कद्र करनी चाहिये साहब कमालों को”।
किसी गुमनाम शायर की इन मशहूर पंक्तियों को हमारे हिंदी-उर्दू के कवियों और शायरों ने अपने दिल पे ले लिया है शायद ।
वैसे तो हिंदी –उर्दू वाले अपनी भाषाई शुध्दता पर गुमान करते हुए खुद को दूसरे से श्रेष्ठ बताते हैं और एक दूसरे पर तंज कसते रहते हैं।
मगर जैसे ही कोई ऐसे मुशायरे या कवि सम्मेलन की घोषणा होती है तो दोनों प्रजातियों के लोग एक दूसरे के गिले -शिकवों को परे रखकर तुरंत गंगा -जमुनी तहजीब की बात करने लगते हैं ।
वैसे तो हमारी हिंदी में कवियों का स्थान बहुत ऊंचा माना जाता है ।
उनके सम्मान में तो यहां तक कहा जाता है कि
“जहाँ न पहुंचे रवि,
वहाँ पहुंचे कवि”।
कवि की महत्ता इतनी थी कि शिवाजी के दरबार में भूषण और पृथ्वीराज चौहान के दरबार में चंदबरदाई को बहुत ही ऊंचा दर्जा प्राप्त था ।
मगर दरबार में इतना राजे-महाराजों के बराबर बैठने वाले कवि आहिस्ता -आहिस्ता कब दरबारी कवि में बदल गए,यह पता ही नहीं चल सका।
कवि ऋषि गोपालदास नीरज ने तो कहा है कि
“मानव होना भाग्य है,
कवि होना सौभाग्य”।
पर सेटिंग -गेटिंग और नेटवर्किंग के युग में कवियों की कुछ विशेष प्रजातियां विकसित हुई हैं। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्नवत हैं ।
समकालीन कवि (जो वरिष्ठता की सीमा को पार कर चुके हों पर मार्गदर्शक मंडल में जाने के बजाय कविता में डटे रहते हैं)
आशु कवि (यह प्रजाति ग्रेस पीरियड पर सदैव कार्यरत रहती है। वरिष्ठों को स्टेशन से रिसीव करने और उन्हें स्टेशन पर पहुंचाने के एवज में इस प्रजाति को आशु कवि घोषित करके मंच पर एक दो तुकबंदी सुनाकर मानदेय वाला लिफाफा दिलवा दिया जाता है)
स्थानीय कवि (इन्हें दफ्तरी कवि भी कहा जाता है क्योंकि यह जिले की सीमा में संपर्कों से पैदा हुए अवसर पर ही कविता सुनाते हैं ।जिले से तबादले के बाद इनकी कविता का प्रभाव भी उस जिले से कपूर की टिकिया की तरह उड़ जाता है)
राष्ट्रीय कवि (यह बेहद कॉमन प्रजाति है जो कवि सम्मेलन के लिये हमेशा अपना बैग-सूटकेस तैयार रखती है)
अंतरराष्ट्रीय कवि- (इनकी तो बानगी ही अलहदा है ये सस्ते जैकेट खरीदने अगर नेपाल भी चले जाएं तो अपने को किसी न किसी तरह से अंतरराष्ट्रीय कवि घोषित करवा ही लेते हैं)

प्रादेशिक कवि (दूरदर्शन केंद्रों और आकाशवाणी के आसपास रहने वाले कवि जो हर महत्वपूर्ण अवसर पर सर्वसुलभ रहते हैं जो बुलाने पर तुरंत पहुंच जाते हैं चाहे भुगतान का उम्मीद हो या न हो)
प्रवासी कवि-(ये जब भारत आते हैं तो जितने दिन देश में रहते हैं उतने दिन सुबह-शाम कविता की गंगा ही बहाते रहते हैं)
अप्रवासी कवि ये प्रजाति गूगल मीट और फ़ेसबुक लाइव पर ही अपनी दमदार उपस्थिति देती है। इनकी समझ से भारत में कविता को सिर्फ डिग्री कालेज के हिंदी विभाग के लोग ही थामे हुए हैं वरना हिंदी कविता पाताल लोक में समाहित हो जाये) ।
इसके अलावा मंचो,मुशायरों में कुछ और भी किस्म के वीर कवि और वीरांगनाएँ कवयित्रियां सक्रिय हैं जिनकी प्रमुख कोटि है-
विश्व कवि, दिव्य कवि, गीत कवि, हास्य कवि, पैरोडी कवि, सिद्ध कवि, प्रसिद्ध कवि, और इन सबमें जो सबसे दुर्लभतम श्रेणी है वह है गिद्ध कवि की।
गिद्ध कवि (जो अन्य कवियों के मानदेय के लिफाफे रख लेते हैं यह कहकर कि उन्हें बाद में दे देंगे और फिर कभी नहीं देते)
एक दूसरी प्रजाति है जो कही जाती है युग कवि।
इसी युग कवि में से एक आला केटेगरी होती है चुग कवि की।
चुग कवि- (ये ऐसे कवि हैं जो दूर दराज के कवि सम्मेलनों में किसी नए कवि द्वारा सुनाई गई कविता को टीपते रहते हैं और उसे प्रमुख कवि सम्मलेनों में अपने नाम से सुनाते हैं)
सेवानिवृत्त कवि (यह प्रजाति कविताईके हिसाब से सबसे खतरनाक मानी गई क्योंकि यह दिन रात न सिर्फ कविता करते हैं बल्कि लोगों को पकड़ -पकड़ कर कविता सुनाती है । जनहित में चेतावनी शाया हुई है कि ऐसे खतरनाक कवियों की प्रजाति से मार्निंग वाक में दूरी बनाकर चलना चाहिए)
उन्मादी कवि- (ऐसे कवि जो अपनी कविता के जरिये पाकिस्तान और चीन का भूगोल बदलने की चेतावनी देते रहते हैं ।
प्रगतिशील कवि (इसमें उस कोटि के कवि आते हैं जिनकी कविता न तो अव्वल किसी को समझ आती है और कवि भी किसी के समझ में नहीं आता)
मुखर कवि - (अपने चीखने -चिल्लाने को ये हजरात कविता घोषित कर देते हैं)
प्रखर कवि-(ये आम तौर पर चुप ही रहते हैं सही अवसर के ताक में रहते हैं और कवि सम्मेलन का मानदेय प्राप्त होते ही मुखरता से आयोजक की ही आलोचना करने लगते हैं) ।
इनसे इतर कुछ और नाम कविता में छूटे हुए लगते हैं। इन सबसे इतर हिंदी के तमाम प्लेटफार्म्स पर कुछ और कवियों की प्रजातियां देखी -पाई जा रही हैं। उनमें से प्रमुख निम्न हैं
छपास कवि, रचनाचोर कवि,चितचोर कवि,तथाकथित कवि, अकविता के कवि, छवि के कवि, मंचीय कवि, उखाड़ू कवि, गद्य कवि, फाड़ू कवि, और इन पर भारी पड़ने वाली है कबूतर बाज कवि।
कबूतरबाज कवि(वैसे तो कवियों की अनेक क्लासिक प्रजातियों का विश्लेषण विद्वान आलोचकों द्वारा किया जा चुका है परन्तु आधुनिक कवियों की एक विशेष प्रजाति 'कबूतरबाज कवि' भी आजकल सामने आकर धमाल मचा रही है)
"कबूतरबाज़ कवि वह है जो कई कवियों को अपने गुट में रखता है और सबका रेट बताकर सम्मेलन में उनका आमन्त्रण फ़िक्स करता है और बदले में उस कबूतर कवि के मंच पर स्वयं आमंत्रित होकर लिफाफा ग्रहण करता है। यह वरिष्ठ होता है और गजब का सम्मेलन लपेटू होता है।"
कवियों की बाकी प्रजातियों पर शोध-संग्रहण गतिमान है । आप और कितने कोटि के कवियों को जानते हैं।

हाइकु

गाँव के घर
सोने जैसे हैं लोग
प्यार करते

देश के गाँव
चमके मोती जैसे
किसान खुश

जैविक खेती
देती ज्यादा आय
स्वस्थ रखे जो

-रमा गर्ग, अमेरिका
+1 708 800 6580

डॉ. भीमराव अम्बेडकर : शिल्पी या एकमात्र निर्माता?

—सिद्धार्थ तिवारी, शोधार्थी (बीएचयू)

सारांश (Abstract): इस शोधपत्र का उद्देश्य भारतीय संविधान निर्माण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भूमिका को ऐतिहासिक तथ्यों, दस्तावेजों एवं अन्य व्यक्तित्वों के योगदान के आलोक में विश्लेषित करना है। आज डॉ. अम्बेडकर को 'संविधान निर्माता' कहा जाता है, किंतु यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या यह पदवी 'एकमात्र निर्माता' के रूप में उचित है? यह शोध इस भ्रम की व्याख्या करता है कि 'मुख्य वास्तुविद्' (Chief Architect) और 'एकमात्र निर्माता' (Only Creator) में क्या अंतर है, तथा यह प्रवृत्ति सामाजिक-राजनीतिक विमर्शों में कैसे उत्पन्न हुई।

परिचय: भारत का संविधान आधुनिक विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान है, जिसकी रचना एक दीर्घकालीन विचार-विमर्श, बहस और बहुलतावादी दृष्टिकोण से सम्पन्न हुई। यह केवल एक विधिक दस्तावेज नहीं, अपितु भारत के स्वतंत्रता संग्राम की भावनात्मक, सामाजिक और राजनीतिक परिणति भी है। संविधान निर्माण का कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही आरम्भ हो गया था। 1934 में एम. एन. रॉय ने संविधान सभा के गठन का विचार सबसे पहले प्रस्तुत किया, जिसे 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने समर्थन दिया। 1946 में ब्रिटिश सरकार द्वारा कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत संविधान सभा की स्थापना हुई। यह सभा पहली बार 9 दिसंबर 1946 को एकत्रित हुई। भारत का संविधान किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि एक सामूहिक चिंतन और विमर्श की उपज है। बी. एन. राव और प्रारूप समिति के अन्य सदस्य बिना किसी व्यक्तिगत महिमामंडन के गहन और मौन योगदान देने वाले वास्तुकार थे। यह तथ्य संविधान के समग्र मूल्यांकन में आवश्यक है, ताकि ऐतिहासिक न्याय सुनिश्चित हो सके। इस शोधपत्र का उद्देश्य इसी बहुलता और विविधता में डॉ. अम्बेडकर की विशिष्ट भूमिका की पहचान करना है। साथ ही यह विश्लेषण करना है कि किस आधार पर उन्हें 'संविधान निर्माता' कहा गया, और क्या यह संज्ञा उन्हें 'एकमात्र निर्माता' के रूप में चित्रित करती है या एक प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में।

संविधान सभा की विशेषताएं : कुल सदस्य प्रारंभ में 389 थे, बाद में भारतीय विभाजन के पश्चात 299 रह गए। विभिन्न प्रांतों और समुदायों से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। संविधान सभा का अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को निर्वाचित किया गया। संविधान सभा में न केवल विधिक या राजनीतिक विशेषज्ञ थे, बल्कि विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषिक पृष्ठभूमियों से आए हुए प्रतिनिधि भी शामिल थे। इस सभा ने लगभग तीन वर्ष (2 वर्ष 11 माह 18 दिन) तक कार्य किया और 26 नवम्बर 1949 को संविधान को अंगीकृत किया गया। इस सभा में विभिन्न समितियाँ गठित की गईं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण थी 'प्रारूप समिति' (Drafting Committee)।

डॉ. अम्बेडकर की नियुक्ति के आधार : डॉ. अम्बेडकर प्रारंभ में संविधान सभा के लिए सीधे निर्वाचित नहीं हुए थे, किंतु बंगाल की जगह बाद में बॉम्बे प्रांत से वे निर्वाचित कराए गए। उनकी नियुक्ति का आधार केवल सामाजिक प्रतिनिधित्व नहीं था, बल्कि उनकी विधिक विशेषज्ञता और संवैधानिक मामलों में गहन जानकारी थी। उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से कानून एवं राजनीति में उच्च अध्ययन किया था, कोलंबिया विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी, और भारत सरकार में श्रम मंत्री के रूप में कार्य कर चुके थे। डॉ. अम्बेडकर को संविधान निर्माण में उनके पूर्व कार्यों, जैसे 'Annihilation of Caste', 'States and Minorities', व 'Thoughts on Linguistic States' आदि के माध्यम से उनकी संवैधानिक दृष्टि और प्रशासनिक सोच को

को देखा गया था। संविधान सभा में कांग्रेसी नेतृत्व (विशेषतः नेहरू, पटेल और प्रसाद) ने यह स्वीकार किया कि यद्यपि डॉ. अम्बेडकरकांग्रेस के सदस्य नहीं थे, लेकिन उनकी बौद्धिक क्षमता, कानूनी योग्यता, तथा सामाजिक न्याय पर दृष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही कारण रहा कि प्रारूप समिति के अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति से उन्हें चुना गया।

प्रारूप समिति केअन्य सदस्यों की भूमिका एवं तुलनात्मक विश्लेषण : प्रारूप समिति में सात सदस्य नियुक्त किए गए थे, जिनमें से प्रत्येक की अपनी एक विशिष्ट विशेषज्ञता थी। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर इसके अध्यक्ष बनाए गए थे, परंतु अन्य सदस्यों की भूमिका भी संविधान निर्माण की प्रक्रिया में उतनी ही महत्वपूर्ण रही।

प्रारूप समिति के सदस्य :
1. डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर (अध्यक्ष)
2. एन. गोपालस्वामी आयंगर - अनुभवी प्रशासक और दीर्घकालीन केंद्रीय मंत्री। संघीय ढांचे के पक्षधर और अनुच्छेद 370 जैसे संवेदनशील विषयों पर महत्वपूर्ण भूमिका।
3. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी - वरिष्ठ वकील और विद्वान लेखक। उन्होंने संविधान में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिंदी भाषा के स्थान, और समान नागरिक संहिता पर जोर दिया।
4. अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर - मद्रास उच्च न्यायालय के पूर्व जज और महान न्यायविद्। विधिक भाषा की स्पष्टता और अनुच्छेदों की संगति में प्रमुख योगदान।
5. डॉ. बी. एल. मित्तल - प्रतिभाशाली विचारक, जो बाद में भारत छोड़कर पाकिस्तान चले गए।
6. मोहम्मद सादुल्ला - प्रख्यात मुसलमान नेता एवं पूर्व असम के मुख्यमंत्री। अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर ध्यान दिया।
7. डी. पी. खेतान - औद्योगिक और कानूनी विशेषज्ञ। दुर्भाग्य से प्रारंभिक चरण में ही उनका देहावसान हो गया।

इन सभी सदस्यों ने अपने-अपने क्षेत्र की विशेषज्ञता के अनुसार संविधान निर्माण में योगदान दिया।

सदस्य विशेषज्ञता योगदान का स्वरूप : डॉ. अम्बेडकर विधिशास्त्र, समाजशास्त्र समिति का नेतृत्व, अनुच्छेदों का प्रारूप निर्धारण, समाज-सुधारक दृष्टिकोण, अ. कृ. अय्यर संवैधानिक कानून मौलिक अधिकारों की रचना में विशेष भूमिका, के. एम. मुंशी इतिहास, कानून सांस्कृतिक अधिकार, संघीय ढांचे की रक्षा, एन. गोपालस्वामी आयंगर प्रशासन, सिविल सर्विस जम्मू-कश्मीर से संबंधित प्रावधान, अनुच्छेद 370, सैयद मोहम्मद सादुल्ला प्रशासन, मुस्लिम लीग अनुभव अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर ध्यान, बी. एल. विश्वास सामाजिक प्रतिनिधित्व समावेशी दृष्टिकोण में सहयोग, डी. पी. खेतान / टी. टी. कृष्णामाचारी वाणिज्य, कानून संशोधित प्रारूप का प्रस्तुतीकरण और व्याख्या।

विशेषज्ञता का तुलनात्मक अवलोकन : प्रारूप समिति के सदस्यगण विविध पृष्ठभूमि से आए थे — विधि, प्रशासन, समाजशास्त्र, इतिहास आदि। समिति में डॉ. अम्बेडकर को अध्यक्ष बनाने का मुख्य कारण उनकी विधिक विशेषज्ञता, सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता, और संविधानिक ढांचे को समावेशी एवं समतामूलक बनाने की दृष्टि थी। प्रारूप समिति की बैठकों में अल्लादी अय्यर और मुंशी जैसे सदस्यों ने विभिन्न अनुच्छेदों पर गहन कानूनी बहसें कीं। मुंशी ने 'भारत की संस्कृति की सुरक्षा' को प्रस्तावना में जोड़ने की वकालत की। इसी प्रकार गोपालस्वामी आयंगर ने संघीय ढांचे और राज्यों की विशेष स्थिति पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया।

अतः यह कहना समीचीन नहीं कि संविधान केवल डॉ. अम्बेडकर की ही देन है, वरन् यह एक सामूहिक और विविधतापूर्ण प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें प्रारूप समिति के सभी सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

संविधान के अदृश्य निर्माता : भारतीय संविधान का निर्माण कोई एक व्यक्ति का कार्य नहीं था, बल्कि यह सैकड़ों बुद्धिजीवियों, विधिवेताओं, प्रशासकों और समाजसेवियों के समवेत प्रयास का परिणाम था। यद्यपि डॉ. भीमराव अम्बेडकर को इस प्रक्रिया में विशिष्ट भूमिका के लिए स्मरण किया जाता है, परंतु बी. एन. राव जैसे संविधान के Constitutional Advisor, प्रारूप समिति के अन्य सदस्य और संविधान सभा के अन्य प्रमुख सदस्य भी इस प्रक्रिया के आवश्यक स्तंभ थे।

बी. एन. राव, के. टी. शाह और अन्य विशेषज्ञों का योगदान : भारतीय संविधान के निर्माण में प्रारूप समिति के अतिरिक्त अन्य विशेषज्ञों एवं सलाहकारों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही। इनमें विशेषतः श्री बी. एन. राव (Benegal Narsing Rau), प्रोफेसर के. टी. शाह, और अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर जैसे नाम अग्रगण्य हैं। ये वे व्यक्तित्व हैं जिनके बिना भारतीय संविधान की संरचना अपूर्ण मानी जाएगी।

बी. एन. राव, संविधान का संवैधानिक सलाहकार : बी. एन. राव भारतीय संविधान के संवैधानिक सलाहकार थे, जिनकी नियुक्ति संविधान सभा द्वारा अक्टूबर 1946 में की गई थी। उन्होंने ही प्रारंभिक मसौदे की रूपरेखा तैयार की और विभिन्न देशों के संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन कर भारतीय संदर्भ में एक रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन, आयरलैंड, कनाडा, और ऑस्ट्रेलिया के संविधान का गंभीर अध्ययन कर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जो प्रारूप समिति के लिए आधार बनी। उनकी भूमिका संविधान निर्माण की आधारशिला के रूप में थी। यहाँ तक कि डॉ. अम्बेडकर ने स्वयं स्वीकार किया था कि बी. एन. राव की संस्तुतियाँ और प्रारूप ही प्रारूप समिति के कार्य को सुदृढ़ आधार प्रदान करती थीं।

इनकी भूमिका कई दृष्टियों से आधारशिला जैसी थी :
1. प्रारंभिक मसौदा निर्माण : बी. एन. राव ने विश्व के अनेक संविधानों का गहन अध्ययन कर भारत के लिए एक प्रारंभिक मसौदा तैयार किया। यह मसौदा प्रारूप समिति को विचारार्थ सौंपा गया।
2. अंतरराष्ट्रीय संविधान विशेषज्ञता : उन्होंने अमेरिका, आयरलैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, सोवियत संघ आदि देशों के संविधान की तुलनात्मक समीक्षा की और भारतीय संदर्भ में क्या उपयुक्त होगा, यह सुझाया।
3. न्यायपालिका की संरचना : भारत में स्वतंत्र न्यायपालिका की जो नींव रखी गई, उसमें राव का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने भारत के सर्वोच्च न्यायालय की अवधारणा को अमेरिकी न्याय प्रणाली से प्रेरणा लेकर प्रस्तुत किया।
4. ब्रिटिश और भारतीय परंपरा का संतुलन : Government of India Act, 1935 के कई भागों को किस प्रकार भारतीय संदर्भ में परिवर्तित किया जाए, इस पर राव ने विधिक मार्गदर्शन दिया।

के. टी. शाह, समाजवादी आलोचक और वैकल्पिक प्रस्तावक : प्रोफेसर के. टी. शाह एक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री एवं संविधान सभा के सदस्य थे, जिन्होंने संविधान सभा की बहसों में अनेक वैकल्पिक प्रस्ताव प्रस्तुत किए। उन्होंने संविधान की प्रस्तावना में "सेक्युलर", "सोशलिस्ट" और "फेडरल" जैसे शब्दों को जोड़ने की मांग की थी, यद्यपि ये प्रस्ताव अस्वीकृत हो गए। उनकी वैचारिक उपस्थिति ने संविधान सभा की बहसों को विचारपूर्ण और बहुस्तरीय बनाया।

अन्य सदस्य, विशद अनुभव और विशेषज्ञता : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का कार्य संविधान सभा के अध्यक्ष होने के नाते केवल औपचारिक नहीं था। उन्होंने चर्चाओं को संयमपूर्वक चलाया और निष्पक्ष रूप से विविध दृष्टिकोणों को स्थान दिया। जवाहरलाल नेहरू 'Objectives Resolution' के प्रस्तुतकर्ता थे, जो बाद में संविधान की प्रस्तावना का आधार बना। सरदार पटेल ने राज्यों के एकीकरण एवं नागरिक सेवाओं की संरचना में अग्रणी भूमिका निभाई। अय्यर ब्रिटिश भारत के अनुभवी अधिवक्ता थे, जो "ड्यू प्रोसेस ऑफ लॉ" जैसी अवधारणाओं के पक्षधर थे और उन्होंने बुनियादी अधिकारों के स्वरूप को गढ़ने में योगदान दिया।

"Chief Architect" पद की वैधता, मूल्यांकन और आलोचना : भारतीय संविधान को "Chief Architect of the Indian Constitution" कहे जाने वाले डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भूमिका को लेकर दशकों से विद्वानों के बीच बहस चली आ रही है। यह उपाधि उन्हें स्वयं संविधान सभा ने नहीं दी, बल्कि यह एक सामाजिक-राजनीतिक स्वीकार्यता से उत्पन्न हुई, जिसे समय के साथ प्रचलन और श्रद्धा ने पुष्ट किया। इस खंड में इस उपाधि की वैधता एवं आलोचना का विवेचन प्रस्तुत है।

इस पद की वैधता के पक्ष में :
1. प्रमुख नेतृत्व की भूमिका : प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में डॉ. अम्बेडकर ने प्रारूप तैयार किया, उसकी व्याख्या की, और संविधान सभा में उठाए गए आपत्तियों का विधिपूर्वक उत्तर दिया।
2. न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता की दृष्टि: प्रस्तावना में निहित मूलभूत मूल्यों की अवधारणा में उनका योगदान निर्विवाद है। वे संविधान को केवल शासकीय ढांचे का दस्तावेज नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का माध्यम मानते थे।
3. बहसों में प्रभावशाली हस्तक्षेप: डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभा की चर्चाओं में कई बार संविधान की आत्मा पर वक्तव्य दिए, जिससे उनकी दृष्टि वाचक रूप में सामने आई।
4. दलितों और शोषित वर्गों के लिए संवैधानिक सुरक्षा: उन्होंने आरक्षण, सामाजिक समानता, मौलिक अधिकारों के तहत धार्मिक स्वतंत्रता जैसे प्रावधानों के लिए दृढ़ता से प्रयास किया।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण :
1. एकल व्यक्ति का महिमामंडन : कुछ विद्वानों का तर्क है कि संविधान निर्माण एक सामूहिक कार्य था। प्रारूप समिति के अलावा संविधान सभा के 299 सदस्य, और विशेषतः बी. एन. राव जैसे विशेषज्ञ जिन्होंने प्रारंभिक मसौदा तैयार किया, की भूमिका कम करके आँकी जाती है।
2. राजनीतिक उपयोग : "Chief Architect" की पदवी को कुछ राजनीतिक विचारधाराओं ने केवल अम्बेडकर के प्रति भावनात्मक समर्थन पाने के लिए भी प्रयुक्त किया है, जिससे यह पद एक आलोचनात्मक जांच का विषय बना।

3. वास्तविक उपाधि नहीं : भारत सरकार के किसी भी आधिकारिक दस्तावेज में डॉ. अम्बेडकर को "Chief Architect" की उपाधि नहीं दी गई है। यह एक लोकप्रिय सम्मानसूचक उपाधि है, न कि संवैधानिक पद।
4. कुछ सीमितताओं का प्रश्न : अम्बेडकर का ध्यान मुख्यतः सामाजिक न्याय पर केन्द्रित था। जबकि संघीय ढांचा, वित्तीय प्रशासन, न्यायिक स्वतंत्रता जैसे विषयों पर अन्य सदस्यों की अधिक विशेषज्ञता थी।

"अम्बेडकर को संविधान का एकमात्र निर्माता कहने की प्रवृत्ति कैसे शुरू हुई?" :
1. ऐतिहासिक संदर्भ : संविधान लागू होने के बाद 1950 के दशक में सरकारी दस्तावेजों, संसद और राष्ट्रपति के भाषणों में अम्बेडकर को "मुख्य शिल्पी" (Chief Architect) कहा गया, न कि एकमात्र निर्माता।
उन्होंने संविधान का मसौदा तैयार किया, बहस का नेतृत्व किया, और विरोधों का सामना कर उसे संतुलित रूप दिया, इसीलिए उन्हें प्रमुख शिल्पी कहा गया।
2. सामाजिक आंदोलन और दलित चेतना : 1970 और 80 के दशक में दलित आंदोलन और बौद्ध धर्मांतरण के बाद डॉ. अम्बेडकर एक प्रतिरोध और स्वाभिमान के प्रतीक बनकर उभरे। इन आंदोलनों ने उनके योगदान को केंद्र में रखकर यह कहा कि "जो हमें अधिकार दिला गया, वही असली निर्माता है"। लेकिन कई बार इस प्रक्रिया में अन्य महान योगदानकर्ताओं के कार्य को नज़रअंदाज़ या गौण कर दिया गया।
3. राजनीतिक दलऔर विमर्श : कांग्रेस, BSP, RPI, और कुछ वामपंथी दलों ने समय-समय पर डॉ. अम्बेडकर को चुनावी राजनीति के लिए प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया। कांग्रेस ने एक समय अम्बेडकर की उपेक्षा की थी (उन्हें 1951 में कैबिनेट से इस्तीफा देना पड़ा), लेकिन बाद में उन्हें 'संविधान निर्माता' के रूप में महिमामंडित किया।
4. मीडिया और लोकविमर्श : लोकप्रिय मीडिया, स्कूल की किताबें, सरकारी कार्यक्रमों में सरलीकरण की प्रवृत्ति होती है। वहां किसी एक नाम को प्रमुखता देना आसान होता है — और यही हुआ। "अम्बेडकर : संविधान निर्माता" यह एक प्रकार का सांस्कृतिक शॉर्टकट बन गया।

डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि : अम्बेडकर स्वयं कभी यह दावा नहीं करते कि वे "एकमात्र निर्माता" थे। उन्होंने संविधान सभा में कहा :

"I was a hack. What I was asked to do, I did much against my will."
(CAD, Vol. XI, p. 979)

उन्होंने यह भी कहा कि संविधान सभा का कार्य सामूहिक था, और वह केवल प्रारूप समिति की ओर से प्रस्तुतकर्ता थे।

निष्कर्षत : डॉ. अम्बेडकर को 'संविधान निर्माता' कहना उनके नैतिक, विधिक और सामाजिक योगदान का सम्मान है — किंतु 'एकमात्र निर्माता' कहना ऐतिहासिक अन्याय होगा, न केवल अन्य संविधान सभा सदस्यों के प्रति, बल्कि स्वयं डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि के भी विरुद्ध। संविधान निर्माण एक साझा बौद्धिक-राजनैतिक प्रयास था। जिसमें प्रारूप समिति की भूमिका 'मसौदा तैयार करने' की थी, किंतु मसौदे को स्वीकार करना, उस पर बहस करना और संशोधन करना पूरे संविधान सभा का कार्य था। यहाँ तक कि जिस प्रारूप समिति ने संविधान का अन्तिम रूप दिया, जिस समिति के अम्बेडकर अध्यक्ष थे उस प्रारूप समिति में 6 अन्य सदस्य भी थे जैसे – के.एम. मुंशी, एन. गोपालस्वामी आयंगर आदि। बी.एन. राव ने प्रारंभिक मसौदा तैयार किया था। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अध्यक्षता की थी और अंतिम रूप पर अनुमोदन दिया। विभिन्न समितियों (कुल 22) और उप-समितियों ने विषयवार सुझाव दिए। इसलिए किसी एक व्यक्ति को 'एकमात्र निर्माता' कहना ऐतिहासिक दृष्टि से असंतुलित है। यह कहना गलत नहीं कि अम्बेडकर प्रधान नियोजक थे, पर "एकमात्र निर्माता" कहकर अन्य स्वतंत्रता सेनानियों, विधिज्ञों, व विद्वानों के योगदान की उपेक्षा ऐतिहासिक सत्य के विरुद्ध है। इसलिए — अम्बेडकर को 'मुख्य शिल्पी' (chief architect) मानना तथ्यपरक और संतुलित है, परंतु 'एकमात्र निर्माता' (only creator) कहना अन्य सभी योगदानकर्ताओं के साथ अन्याय होगा।

संदर्भ (References):

1. Austin, G. (1966). The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation. Oxford University Press.
2. Constituent Assembly Debates. (1946–1949). Lok Sabha Secretariat, New Delhi.
3. Basu, D. D. (2013). Introduction to the Constitution of India. LexisNexis.
4. Noorani, A. G. (2000). Constitutional Questions in India. Oxford University Press.
5. Granville Austin Archives, National Archives of India.
6. Omvedt, G. (2004). Ambedkar: Towards an Enlightened India. Penguin.
7. Zelliot, E. (1992). From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement.
8. Jaffrelot, C. (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste.
9. Noorani, A. G. (2000). Constitutional Questions in India: The President, Parliament and the States. Oxford University Press.

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

सफर जारी है

ये जिंदगी है जनाब
जिन्हें अपना सफर
अनवरत जारी रखना होता है,
जहां जिंदगी ठहर जाए
वहां सफर खत्म करना होता है,
सिलसिला विभिन्न चक्रों से घूमते,
हंसी,खुशी,दुख,गम चूमते,
न कहीं रुकना,
न किसी के आगे झुकना,
तमाम रंगों से सराबोर होते,
कभी नींद से जागते कभी सोते,
प्रेरित करता कभी देश का प्रेम,
कभी अपने वंचित समाज के प्रति प्रेम,
कभी गांव के लिए प्रेम,
कभी परिवार के प्रति प्रेम,
और कभी स्वयं के लिए प्रेम,
मन की भावना सबके लिए कुशलक्षेम,
लक्ष्य जनजागृति की राह से
तनिक भी विचलित न होने का,
कांटे निकलने का न कभी बोने का,
यही तो सफर है,
सतत आगे की ओर अग्रसर होने का।

-राजेन्द्र लाहिरी (छतीसगढ़)
+91 9907974018

रात और सपनें

रातों को जाग कर हमने क्या पाया
दिन में सो कर हमने क्या खोया
इस पाने-खोने के सिलसिले ने हमें
स्वयं से स्वयं को मिलाया
खुद है क्या हम
इस कशमकश ने बताया
ज़िंदगी है क्या असल में
इसने ही हमें सिखाया
हम थे क्या और अब क्या हैं
यह प्रश्न तब भी था, यह अब भी है
जागने की वजह थी क्या?
अंधेरे से मिली सहानुभूति या कुछ और...
क्या थी कुछ और.....
कुछ अपनों के सपने थे
तो कुछ अपनी नादानी
कुछ अपनों के प्यार थे
तो कुछ अपनों की नाराज़गी
आख़िर था क्या वह
जिसने थामा अंधेरे में हमारा हाथ
जिसने सबसे ऊपर उठाया
और, सपनों को साकार रूप प्रदान करने को व्याकुल किया
थाम कर हमें राह दिखाया
जीवन को सार्थक कर
ज़िंदगी जीना सिखाया
ज़िंदगी जीना सिखाया।।

-सिया राय (दार्जिलिंग)
+91 8345835410

मेरे पापा

'पिता', 'जनक', 'पापा' इन शब्दों का स्मरण होते ही मन में एक हल्की-सी सिरहन दौड़ जाती है। अक्सर इच्छा होती है कि पिताजी के लिए कुछ लिखूं, पर जैसे ही काग़ज़-कलम उठाती हूं, मन और मस्तिष्क एकदम मौन हो जाते हैं। विचार ठिठक जाते हैं, हाथों में कंपन-सा महसूस होता है, और आंखों में न जाने कहां से पानी उतर आता है। इन जीवन की कठिनाइयों में जब भी थकान महसूस होती है, तब याद आते हैं वे दिन... जब बचपन में पिताजी मुझे साइकिल चलाना सिखाते थे। साइकिल की हैंडल थामे वे कहते कि "मैंने पकड़ रखा है, तुम बस चलाओ।" मैं चलाने लगती और जब साइकिल डगमगाने लगती, तो वे मुझे और साइकिल दोनों को संभाल लेते। मुस्कुराकर कहते है कि "मैं तो हूं ही पीछे।" धीरे-धीरे मेरे भीतर यह विश्वास बैठ गया कि मैं कभी गिरूंगी नहीं, क्योंकि पिताजी ने साइकिल पकड़ रखी है। और अगर मैं डगमगाई भी, तो वे मुझे थाम लेंगे। इस अटूट भरोसे के साथ मैं निडर होकर साइकिल चलाने लगी। जब उन्होंने देखा कि अब मैं थोड़ा-थोड़ा सन्तुलन बनाने लगी हूं, तो वे धीरे-धीरे अपनी पकड़ ढीली करने लगे। बिना मुझे बताये। और मैं साइकिल चलाती रही, यह जाने बिना कि अब मैं अपने ही बल पर चल रही हूं। इसी तरह मैं साइकिल चलाना सीख गई। अब जब पिताजी को याद करती हूं, तो महसूस होता है। पिता सिर्फ चलना, बोलना या साइकिल चलाना ही नहीं सिखाते, वे जीवन जीने की अनकही कलाएं भी सिखाते हैं। हम उन्हें अक्सर अनदेखा कर देते हैं, पर सच तो यही है कि पिता हमें केवल जीवन नहीं देते, जीवन जीना सिखाते हैं।

-वेदिका गुरव
तृतीय वर्ष-कला संकाय, भैंसदेही

दिल्ली से बनारस

- शशि धर कुमार

"सफर वही नहीं जो रास्ते बदल दे,
सफर वो है जो इंसान को भीतर से बदल दे।"

दिन 1: दिल्ली से बनारस की ओर
सुबह 5:30 बजे — नई दिल्ली रेलवे स्टेशन, हल्की ठंडक और मैं — वंदे भारत एक्सप्रेस के सपनों भरे डिब्बे में।
सुबह 6:00 बजे : ट्रेन ने गति पकड़ी। खिड़की से भागती दिल्ली, दूध के डिब्बे, हँसते बच्चे, और कुछ उदासियाँ भी पीछे छूट गईं।

क्षण विशेष:
पहली चाय: अदरक की हल्की खुशबू के साथ।
कानपुर: दौड़ती भीड़ में समोसे और चटनी की गर्मजोशी।
प्रयागराज: गंगा की पहली झलक और भीतर की हल्की-सी सिहरन।

"खिड़की के बाहर भागती दुनिया,
और भीतर ठहरता हुआ मन।"

दिन 2: बनारस का पहला दिन
सुबह 5:00 बजे — अस्सी घाट: ठंडी फर्श, घुलती अंधेरी लहरें, और सूरज का धीमा उजाला।

खास पल:
एक छोटी नाव, जो बिना खेवे के बहती रही।
दीये वाली बूढ़ी अम्मा से खरीदा गया एक दीप, जिसमें मैंने चुपचाप एक दुआ बाँधी।
गलियों में भटकाव: बनारसी पान, साड़ी की दुकानों की जगमगाहट।
गलियों में आई अचानक बारिश — भीगते हुए हँसती भीड़ और मैं।

"कुछ गलियाँ होती हैं,
जहाँ भीगना इबादत बन जाता है।"

दिन 3: बनारस का दूसरा दिन

सुबह — काशी विश्वनाथ मंदिर: भीड़ के बीच शांति को पकड़ने की कोशिश। नज़रें झुकीं, मन उड़ता रहा।
मुलाक़ात: एक साधु बोले — "घूमते रहो बेटा, जहाँ रुक जाओ वही घर है।"
दोपहर: कुल्हड़ वाली लस्सी की मिठास,
गलियों में छुपे मंदिरों की घंटियाँ।
शाम — गंगा आरती: लहराते हुए दीयों का समुद्र, आरती की ध्वनि में बहती आत्मा।

"गंगा के किनारे चुपचाप बैठा रहा,
जब तक शब्द भी बहे नहीं।"

दिन 4: बनारस से दिल्ली वापसी

सुबह: गंगा को आखिरी प्रणाम, और वंदे भारत में वापसी।
रास्ते के खजाने: गुब्बारे के साथ खेलती छोटी बच्ची। उड़ते हुए पुराने अखबार, गंगा का आखिरी नमस्कार प्रयागराज पार करते हुए।

"कुछ विदाइयाँ शब्दों में नहीं,
सिर्फ़ दिल की भीगती परतों में होती हैं।"

"बनारस एक शहर नहीं, एक अनुभव है,
जो लौटते वक़्त भी साथ चलता है,
दिल में गंगा-सा बहता है।"

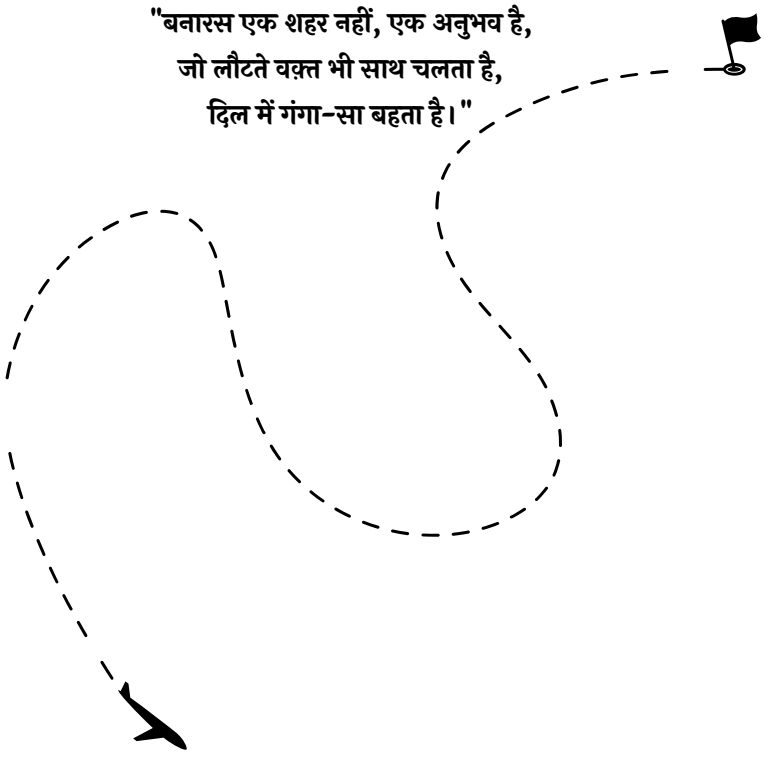

बच्चे क्यों कमाते हैं?

कभी खिलखिलाती थी वो छोटी सी हंसी,
सपनों में खो जाती थी उसकी आँखें बड़ी सी।
खिलौनों से खेलती थी, आँगन में दौड़ती,
पर आज उसी बच्चे की राहें बदलीं, सूनी सी।

वो नन्ही सी जान अब दिन भर काम करती है,
सपनों की उम्मीदें उसके हाथों में लहराती नहीं।
खिलौने नहीं, बस बर्तन हैं उसके पास,
घर से बाहर, हर गली में वह दौड़ती है काम के लिए पास।

उसकी मुस्कान खो गई है, आँखें बुझी हुई हैं,
काम के बोझ तले, ज़िंदगी सिमटी हुई है।
चाँद से उजले दिन अब उसके लिए न आएं,
रातें काली, उसकी मासूमीयत की दीवारें टूट जाएं।

क्यों कमाता है यह बच्चा, जो सिर्फ़ हँसना जानता था?
क्यों चलता है वह सड़क पर, जब उसे खेलना चाहिए था?
क्यों जो सिखाने वाले थे उसे किताबें, वो दे रहे हैं काम का थैला?
क्यों वह भागता है स्कूल से, और माँ-बाप की उम्मीदों का बोझ ढोता है डाला?

अरे, बच्चों को क्यों झेलनी है यह तक़लीफ़ें?
क्यों कोई समझता नहीं, उनकी मासूम हसरतें?
कभी उनकी आँखों में खुशियाँ होनी चाहिए थीं,
अब उनके सपनों के नाम पर तो तन्हाई छाई है।

क्यों बच्चों को मजदूरी की राह दिखाते हो?
क्यों उन्हें उनके बचपन से दूर कर देते हो?
समाज की यह कुरीतियाँ कब तक रहेगीं?
कभी तो यह ज़िंदगी की जंजीरें टूटेंगीं!

-आशीष 'विलोम' (बिहार)
+91 8651742811

मन कहां से लाऊंगा

तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।'
पूरी कर दूंगा चाह तुम्हारी, पर मैं आधा रह जाऊंगा,
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

जिसने मुझे जन्म दिया, पाल - पौष कर बड़ा किया,
सबविध लायक बना मुझे, पग पग पर संस्कार दिया,
लाखों में चुन मुझको तुमने, दूल्हा अपना बना लिया,
तज तो दूंगा मैं उन्हें, बच्चों से नज़र मिला न पाऊंगा,
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

हाँ मैंने कुछ प्रण व्रत लिए थे, तुमको खुशियाँ देने के,
पर तूने भी तो वचन दिए थे, इस घर को अपनाने के,
बहन चली गई घर अपने, पापा भी स्वर्ग सिधार गए,
मां को दर से बदर करके, घर अपना बसा न पाऊंगा,
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

गाड़ी-बंगला हिस्से बांट में, मैं हाँ में हाँ मिला रहा हूं,
आज़ादी के मगरुर जश्न, साथ तुम्हारा निभा रहा हूं,
पथरा गई ये चारदीवारी, लुटी हुई लाज बचा रहा हूं,
जबरन समझौतों के कर्जे, मैं कभी चुका न पाऊंगा,
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

दुख पाते जब मम्मी डैडी, कैसे तड़फ तुम जाती थीं,
मां पापा का दर्द भला, तुम क्यों समझ ना पाती थीं,
ममता की ये काटछांट, कैसे बंदरबांट कर पाती थीं,
बेटी बेटा का फ़रक बड़ा, मैं कभी समझ न पाऊंगा,
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

खेले - कूदे, लड़े - भिड़े, साथ साथ हम जवां हुए,
संगी साथी के पकड़े हाथ, बीच भंवर में छोड़ दिए,
तेरी इक हँसी खातिर, नाते भाईबहन से तोड़ लिए,
बड़े बुजुर्गों को अपना मुख, कैसे दिखला पाऊंगा।
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

कल उनका जब खत आए, जिनको तू अपना माने,
तेरी मेरी तू तू मैं में, कहां 'हम' खो गए बस तू जाने,
मैके बैठी भावज तेरी, कस कस कर जब ताने मारे,
छोटे सालेसाहब को, क्या कुछ मैं सिखला पाऊंगा,
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

पगली इन बिखरावों की, कीमत कितनी चुकाई है,
दादू वाले घोड़े और दादी की परियां हमने गँवाई है,
नन्हें मुन्ने मासूमों की जां, जंजालों में जा फंसाई है,
वो लाड़-दुलार उस आंगन में, फिर कभी न पाऊंगा,
तुम पर पूरा लुटने को फिर, वो मन कहां से लाऊंगा।

- डॉ. मधु गुप्ता (कर्नाटक)
+91 9413974769

बेटी हो हद में रहना सीखो

मिलेंगे कही अगर रहेंगे कभी ,
हवा में किसी ने जहर फ़ैला दिया हो ,
जैसे बेटी को तो कोख़ में ही मार दिया हो ।
पर बच भी गयी तो क्या कर लिया
किसी को जमाने ने तो,
किसी को घर कि परिस्थितियों ने ही घेर लिया ।
चलो कभी अगर रास्तें में तो नज़र झुका के चलना,
करे कोई बत्मिजी तो उसके मुंह ना लगना ।
क्या करोगी जॉब करके दुसरे घर जाना है,
लड़की हो, बड़ों से जुबान नहीं लड़ाते
गलतियों को देख कर अनदेखा कर देना ,
कुछ नहीं सुना ऐसा, बहरा बन जाना
गूंगे कि तरह चुप रहना सिखों
बेटी हो हद में रहना सिखों।
वक्त के मारे है हालातों के सताये है
अब सपने सिर्फ़, सपने ही रह गये
अपने भी बहुत कुछ कहने लग गये
चाहिए था साथ उनका, माथे पर हाथ उनका
पर वो तो अब हाथ छुड़ाने लग गये।
बोझ नहीं रख सकते अब माथे पर
कह कर हटाने लग गये,
दे देंगे दहेज बीस लाख पर पढ़ायेंगे नहीं ,
क्या चाहिए तुमको पूछ कर
कभी बाप का हक जतायेंगे नहीं ।
और ये जो आन्सू निकलते है न तुम्हारे
विदाई के वक्त पर
शायद ये बेटी के दुर होने का दर्द नहीं
उस बोझ का उतरना है जो कई सालों से,
आंखों में चुभ रही थी धुल के कण कि तरह
कर रही हुं कोशिश जी जान से ,
लड़ रही हुं हालातों से वक्त कि मार से
नहीं झेल सकती अब अंदर कि मार को ।
ये सपने उड़ने के शायद अब ना हो पूरे,
उड़ने से पहले ही किसी ने कांट दिये हो पंख ,
निकलो तुम ख्वाबों से और जीना सिखो।
बेटी हो हद में रहना सिखो।।

-नेहा चौरसिया
तिनसुकिया, असम

हसरत पूरी न हुई

- अरुणप्रिय

जनपद सुल्तानपुर के ग्राम - कामापुर सोहगोली में धीर्यप्रसाद पांडेय के यहां 6जून 1942 में जन्मे चंद्रप्रकाश पांडेय समृद्धशाली रचनाकार थे हालांकि उन्होंने कई छंदमुक्त कविताएं भी लिखीं हैं परंतु मूलतः वे कहानीकार ही थे। मेरा उनका निकट का साहित्यिक रिश्ता था, वे शीघ्र ही घुलमिल नहीं पाते इसलिए उनके मित्रों की संख्या कम ही थी। उनके अंतिम समय के दौर में मैं अदना सा ही था जो उनसे मिलता रहा हालांकि अंतिम कुछ माह पूर्व से ही वो मुझे भी भाव न देते और जाने का संकेत देते, मैंने महसूस किया, उनकी पत्नी और बेटा उनके इस कृत्य से मुझे अपनत्व के भाव से नवाज देते और मैं वापस आ जाता। अपने कमजोर दिनों में भी लेखन के प्रति उनका लगाव कम न हुआ था और इस कारण उन्होंने विश्वभर में जल संकट के ऊपर महाभारत कालीन एक उल्लेख के जरिए उपन्यास की नीव रख दी थी इस विषय पर मेरी उनसे कई बार वार्ता भी हुई थी। वे उपन्यास लिखना चाह रहे थे परंतु ये कार्य पूर्ण न हो सका और वो इस संसार विदा हो गए, जल , जंगल और जमीन मनुष्य के लिए सदैव ही चर्चा का विषय रहे हैं जंगलों / ब्रक्षों की सुरक्षा की लड़ाई पर्यावरण विद रहे सुंदरलाल बहुगुणा के चिपको आन्दोलन से समझी जा सकती है। आज भी प्रो राजेंद्र सिंह जैसे लोग जल संरक्षण के लिये जनमानस को जागरूक कर रहे हैं ताकि पर्यावरण की रक्षा होती रहे। जमीन की सच्चाई से हम सब अच्छी तरह वाकिफ हैं। जमीन के एक टुकड़े के लिये नित नये घोटाले उद्योगपतियों से लेकर नेताओं प्रशासनिक अधिकारियों तक की जमीनी हकीकत के किस्से उजागर होते रहते हैं। हम सब भी तो जमीन के एक टुकड़े के लिए अपनी पूरी जिंदगी खपा देते हैं। जल हमारे जीवन का सबसे उपयोगी तत्व है इसके बिना हम जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकते।

कानपुर से अपनी यात्रा समाप्त कर चुके चंद्रप्रकाश पांडेय जीवन भर लिखते रहे अंतिम समय तक उनकी ये जिज्ञासा कम न हुई वे जल्दी जल्दी बीमार पड़ने लगे, बात चीत के दौरान उन्होंने अपनी अंतिम रचना का जिक्र आत्मविश्वास के साथ किया था जो आने वाले जल संकट पर आधारित थी। रचना का जिक्र करते हुये उन्होंने बताया था महाभारत काल में बनवास के दरम्यान पांडवों को जल संकट से जूझना पड़ा था। एक सरोवर के

स्वामी यक्ष और उसके द्वारा प्रश्नों के सही उत्तर न देकर प्राण गवाने वाले भाइयों के पुनर्जीवन के लिए युधिस्ठिर द्वारा सही वार्तालाप और धैर्य ने यक्ष की संतुष्टि के पीछे संभवता यही कहानी रही होगी। बरहाल कहानीकार अपना काम कर रहा था। इस बीच उनकी एक कहानी कच और देवयानी पूर्ण हो चुकी थी जो प्रकाशन की बाट जोह रही है। इसकी पृष्ठिभूमि में भी एक पौराणिक कथा से प्रसंग उठाया गया है, देवताओं के गुरु बृहस्पति के पुत्र कच और राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी की प्रेम कथा को आज के संदर्भ में दर्शाया गया है। पांडेय जी के चार कहानी संग्रह सामांतर रेखाओं के बीच, कोलतार बाली झील, हरि कथा अनंता और मुर्दा टीले की आवाज सामने आये हैं इसके अलावा कई संकलनों में उनकी कहानियां संकलित हैं। समांतर रेखाओं के बीच पुस्तक की समीक्षा दिल्ली के डाक्टर हरदयाल द्वारा की गई जिसे कई प्रसिद्ध पत्रिकाओं ने छापा है। पांडेय जी सीधे सरल विषयों पर कहानियां लिखते रहे, उनकी पहली कहानी - मोह की सांस 1967 में अपर्णा नाम की पत्रिका में छपी थी तब से जीवन पर्यंत ये सिलसिला रुका नहीं। निहारिका, मधुमति, युगप्रभात, आजकल, नई कहानियां, नया प्रतीक, वीना, बिंदु, कल्पना, तटस्थ, एकांत , गल्प भारती, सनीचर, कादम्बिनी, हस्ताक्षर, सतांशु, कहानीकार, कात्यायनी, संचेतना के अलावा लम्बी फेहरिस्त है जिन पत्रिकाओं में वे लंबे समय तक छपते रहे। कई सरकारी पत्रिकाओं में भी उनकी नियमित उपस्थित रही, सतांशु पत्रिका के एक अंक का संपादन भी किया था। सन 70 में संचेतना में छपी कहानी स्त्री बहुत चर्चा में रही बाद में प्रसिद्ध कहानीकार कृष्णबिहारी ने अपनी पत्रिका निकट में भी इसे स्थान दिया। इस कहानी को बाबा नागार्जुन ने भी कानपुर पधार कर उन्हें अपना आशीर्वाद दिया था। पांडेय जी कहते थे बाबा के आशीर्वाद ने मेरे अन्दर लेखन की क्रिया को और गतिशील बना दिया था। साहित्यकार शैलेश मटियानी, नंद चतुर्वेदी, महीप सिंह, डाक्टर ललित शुक्ल जैसे वरिष्ठ रचनाकारों का स्नेह उन्हें सदैव मिलता रहा। रिजर्व बैंक की नौकरी के दरम्यान के अनेक किस्से हैं जिन्हें अभी साझा नहीं कर पा रहा। भोपाल ट्रांसफर होने पर विचलित हो गये थे परंतु एक ज्योतिषी राजकुमार रत्नप्रिय के कहने पर चले गये उसने कहा था चले जाइए शीघ्र ही वापस आ जायेंगे, और हुआ भी वैसा ही इन ज्योतिषी महोदय का जिक्र बाद में उन्होंने अपनी एक कहानी में किया था। अपने भोपाल प्रवास के दौरान कई साहित्यकारों से मिले और संबंध भी बनाए। ई एम फास्टर की पुस्तक आसपेक्ट आफ नावेल का हिंदी रूपांतरण उनकी विशेष उपलब्धि रही। उनकी एक कहानी जंग का प्रसारण आकाशवाणी के कई केंद्रों से किया गया, अनेक कहानियों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हुए। पांडेय जी को सादर नमन।

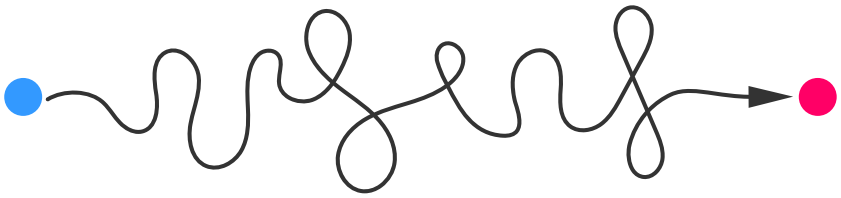

साहित्यिक
मासिक पत्रिका

Pranti

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

कृपया www.prantiindia.com/subscription पर जाएं।

prantiindia.com | @prantiindia | @prantiindia | @prantiindia | +91 9453535495

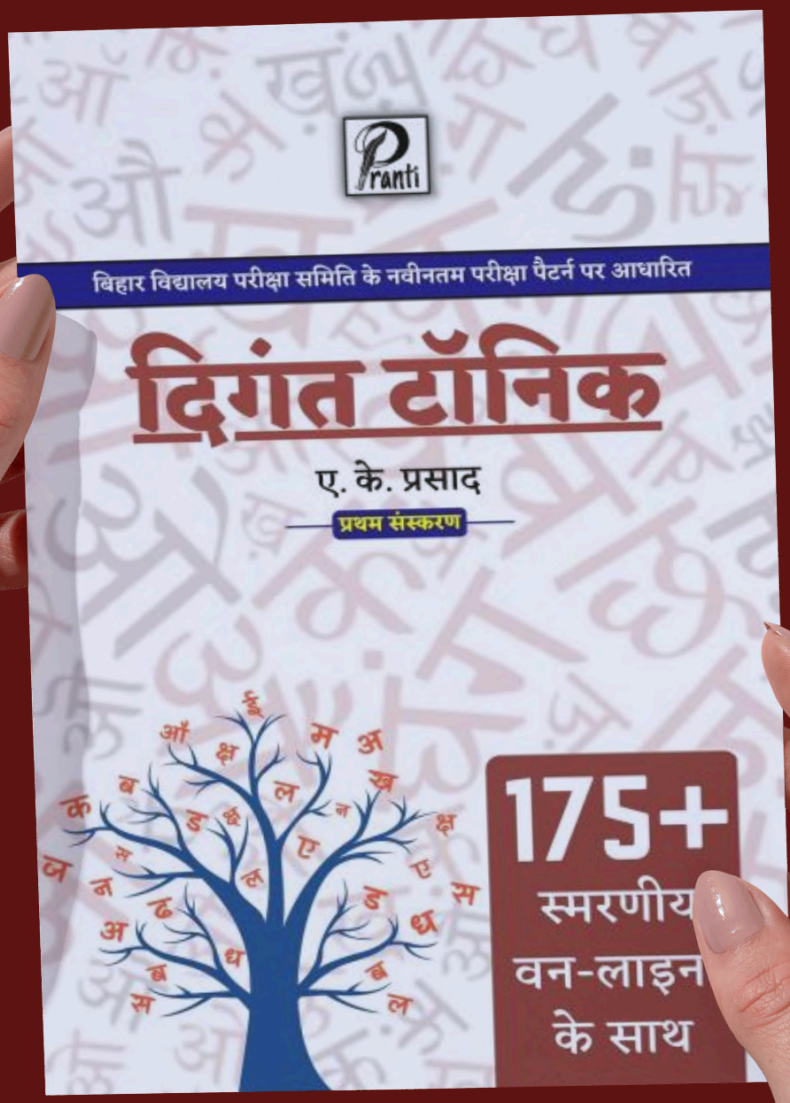

अपनी प्रति बुक करने के लिए व्हाट्सप्प करें-

+91 94-535354-95

FREE DELIVERY

बिहार बोर्ड द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए प्रान्ति इंडिया के तत्वावधान में ए. के. प्रसाद द्वारा अपनी निपुणता की कुंजी को स्याही और अक्षरों के जरिए दिगंत टॉनिक पुस्तक में विभूषित करने का सफल प्रयास किया गया हैं। इस पुस्तक में गद्यखण्ड व पद्यखण्ड के पाठ्यधारित सारांश, महत्वपूर्ण तथ्य और स्मरणीय वन-लाइनर समेत आवश्यक पाठ्य सामग्री समाहित की गई है। इस अनुपम पुस्तक की सृजन की अवधि में पूर्ण लगन से कठिन परिश्रम की गयी हैं, ताकि परीक्षार्थी सही मार्गदर्शन में अपनी ऊर्जा को व्यय करके शानदार सफलता अर्जित कर सकें। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपको यह संकलन अवश्य पसंद आएगा, जो आपकी परीक्षा में सहायक होगा। हम आपकी सफलता और उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

-टीम: प्रान्ति इंडिया